आध्यात्मिक प्रकाश स्तम्भ

प्रकाश स्तम्भ बन प्रकाश देना जिनका काम
`दादी प्रकाशमणि जी, उस नक्षत्र का है नाम
परमपुनीत उस प्रकाश पुंज को प्रणाम
`दादी प्रकाशमणि जी' उस विभूति का है नाम

अति धर्मग्लानि का समय प्रभु लिए अवतार
ब्रह्मा के मानवीय तन में शिव हुए साकार
धरा पे प्रभु पधारे छोड़ अपना परमधाम....

होनहार बिरवा के चिकने होते पात
पूर्ण चरित्रार्थ उक्ति दादी की ही बात
सत्य-स्नेह-शुचिता के शिखर को है सलाम...

ओम मण्डली में आप आई जिस घड़ी
पिताश्री की वो प्रथम दृष्टि थी पड़ी
बड़ी दादी बना दिया बाबा ने बाहें थाम....

नन्हें पौधे को बनाया वृक्ष एक विशाल
नज़रों से निहाल किया, कर्मों से कमाल
तप-त्याग और सेवा का सुखद मिला परिणाम....

संसार की सेवा में सब तो स्वाहा कर दिया
साये में लेके ममता के सुखों से भर दिया
चारों धाम गा रहे गुणगान आठो याम....

हम हैं कहानी दादियों की

हम हैं कहानी दादियों की देन है हम तो निशानियाँ
आज बने हैं जो भी हम तो इनकी मेहरबानियाँ

सदा हमारी सेवा में जिनका सर्वस्व समर्पण है
दैवी गुणों को दर्शाता दादियों का दिल तो दर्पण है
स्नेह-प्यार में पालती अपने सुखों की दे कुर्बानियाँ...

ज्ञान की लोरी सुना-सुना के निज पलकों में पाला है
बड़े प्रेम से सुख के हिंडोले में रख हमें संभाला है
बहुत शुक्रिया बहुत शुक्रिया गाती हैं शहनाईयाँ...

सच्ची श्रद्धांजली यही है हो जायें बलिहार हम
सपने हो साकार इन्हों के असली दें उपहार हम
यही मोहब्बत, यही है इज्ज़त मेहनत मुक्त हों दादियाँ...

इन्हें देख ज्यूं हमें खुशी है हमें देख कर हो इनको
यही स्नेह का सिला है गर निश्चिन्त कर सकें हम इनको
एक बनें, हम नेक बनें, हो ख़त्म वो बीती कहानियाँ...

हमें प्यार बहुत है दादी से

हमें प्यार बहुत है दादी से दादी बिन रह न पायें हम
तो दादी के अरमानों का आओ संसार सजायें हम

इस यज्ञ के नन्हें पौधे को
साकार ने तुमको था सौंपा
उसे इतना वृक्ष विशाल किया
सपने में किसी ने न सोचा
कहते हैं अगर अहसानों को हरगिज़ भुला न पायें हम
तो दादी के अरमानों का....

प्रभु की प्यारी शिक्षाओं को
मीठी मुरली में समझाना
वो निष्ठा, सच्चाई, भोलापन
वो शक्ति-शान्ति का बरसाना
गर सिला तुम्हारे प्यार का दिल से जो देना चाहें हम..
तो दादी के अरमानों का...

कभी पिता सा बनकर प्यार दिया
कभी माँ बन करके दुलार किया
कभी सभी बनी कभी, बहना बन
बांधी राखी सुख संसार दिया
जो दिन बीते दादी के संग उन्हें अमर बनाना चाहें हम
तो दादी के अरमानों को...

सच्चे मन से करते श्रद्धा-सुमन समर्पण

आबू की वादियाँ ये पर्वत की श्रृंखलायें
बहते पवन हैं कहते ये वृक्ष और लतायें
सेवायें याद आयें, कहें चारों धाम हमको
शत् शत् प्रमाण तुमको!
दादी प्रमाण तुमको....

दिन हो पिताश्री का मातेश्वरी का चाहे
भूली कभी ना दादी हम गये बुलाये
सम्मान-प्यार पाये वो कैसे हम भुलायें... बहते पवन

कर दिया जगत में आबू का नाम बाला
दादी प्रकाशमणी के प्रकाश का उजाला
हम धन्यवाद करते! धन्य-धन्य खुद को पायें... बहते पवन

85 वर्षों तक की वो त्याग और तपस्या
सुखदायी सेवा करके हर ली है हर समस्या
मुस्कान तेरी पाकर मुखड़े ये मुस्कायें.. बहते पवन

अध्यात्म के शिखर पर चढ़ी शिव से शक्ति पाकर
अबला सबल हुई है पास तेरे आकर
शक्ति बनी है नारी - पाकरके प्रेरणायें... बहते पवन

जितनी महान थी तुम उतना विनम्र देखा
चिन्ता मिटाने वाली निश्चिन्त तुमको देखा
रेखायें भाग्य वाली तुम्हें देख बढ़ती जायें.. बहते पवन

दिखलाई दैवी दुनिया दिल आपका था दर्पण
हम सच्चे मन से करते श्रद्धा सुमन समर्पण
ऐ काश! संग जो बीते, दिन फिर से लौट आयें.. बहते पवन

खो गयी हैं माँ कहाँ?

लाखों आते-जाते हैं वो याद कभी ना आयेंगे।
पर प्राणों से प्रिय दादी माँ को हम भूल कभी न पायेंगे।।

रो रही हैं ये ज़मी रो रहा है आसमां
पूछते हैं सब यही खो गयी हैं माँ कहा
वो हमारी माँ कहाँ...
कोई इन्हें बता तो दे दादी वहाँ बाबा जहाँ..
पूछते हैं सब यही...

ये ग़म के आसू हैं नहीं कोई न वो बहायेंगे
पर प्रेम के इन मोतियों को कैसे रोक पायेंगे
करेंगे याद दादी को बाबा भी और दादियाँ...
पूछते हैं सब यही...

सब कुछ तो पास है मगर सब कुछ कि जैसे खो दिया
आँख नम नहीं हैं पर हर हृदय है रो दिया
मुरली सुनाना इस तरह करेंगी याद वादियाँ...
पूछते हैं सब यही....

साकार में मात-पिता का सुख हम कितनों ने न पाया था
दादी ने आंचल में भर हम पर किया जो साया सा
ड्रामा कहके बाबा भी न खोलता अपनी जुबाँ
पूछते हैं सब यही....

85 सालों का वो सुख 84 जन्मों में नहीं
हम पूज्य-पूर्वजों को भी मिलेगी ऐसी माँ नहीं
वो सुख वो प्यार-पालना स्वर्ग में भी है कहाँ
पूछते हैं सब यही....

आपकी सेवायें दादी वादी ये दोहरायेगी
हर घड़ी हर बात में दादी याद आयेगी
खूबियों को बाबा भी कर सकेगा क्या बयां
पूछते हैं सब यही....

आपसे जो प्यार है तो आपसा बन दिखायेंगे
शक्ति-स्नेह का ख़जाना सबपे हम लुटायेंगे
यादों में तो साथ हो फिर पास आ जाओ यहाँ
पूछते हैं सब यही.....

याद आयेगी दादी माँ!

क़ायम जब तक ज़मी-आसमां, चमकें सूरज चन्द्रमा
बाबा-मम्मा के संग-संग में याद आयेगी दादी माँ....

कल तक कहते हैं दादी, सहसा कहते हैं - थी दादी
कोई कह दे सपना था वो और है हकीक़त में दादी
क़ाश कि वे दिन लौट आयें तो खुशियों की होगी ना सीमा

दादी, दादी, दादी की सदा सदा ये गूंजेगी
माँ-माँ कहकर मन्दिर में भक्तों की टोली पूजेगी
कहाँ मिलेगी प्यारी-मीठी इतने बड़े दिल वाली माँ... बाबा-मम्मा..

छोटे-बड़े, देसी-परदेसी जिन संग खाया-खेला था
मुस्कराती बाहों को खोले सब पर प्यार उड़ेला था
लाड़-प्यार नाज़ों में हमको पालने वाली ऐसी माँ... बाबा-मम्मा..

बाबा-मम्मा-दीदी ने भी छोड़ा साथ चलते-चलते
यज्ञ की नइया ला दी किनारे तूफां से लड़ते-लड़ते
वाह रे दादी, तू कमाल की! गाते बाबा-दादियाँ... बाबा-मम्मा...

गोद में लेके हाथ फेर के जो हमको दुलराया था
हम मधुबन वालों से पूछो क्या-कया उनसे पाया था
उस दुलार का देंगे सिला हम यज्ञ के रक्षक दादी माँ... बाबा-मम्मा...

ऐ प्राण ! तुझको अलविदा!!

व्यक्त से जाओ भले अव्यक्त में तो आओगी
दूर हो रही तन से पर ना दूर मन से जाओगी
अश्रु पूरित नयनों से ऐ प्राण तुझको अलविदा
कल्प भर को दादी तुझको अलविदा है अलविदा

तुमने ही सिखलाया है हमको न रोना है कभी
सबके आंसू पोछने हैं नयन गीले हैं सभी
यादों की महफिल में दादी लौट फिर-फिर आओगी
दूर हो रही तन से.....

आपका अस्वस्थ दिखना मात्र एक बहाना था
इस बहाने पांव पे अपने रहना खड़े सिखलाना था
चन्दन में कुन्दन की दमक दिखला रही दिखलाओगी
दूर हो रही तन से....

श्वाँस और संकल्प से भी जो दिया संसार को
जग भूल पायेगा नहीं माँ तुम्हारे प्यार को
मन्दिरों में मूर्ति बन वरदान देती जाओगी
दूर हो रही तन से....

जा रही हो जल्दी मिलने का भी तो वादा करो
बाप सा बनें आपसा बनें दूर हर बाधा करो
शिव शक्ति सेनानी अब भी शक्ति भरने आओगी
दूर हो रही तन से....

चिर निद्रा में लेटी हुई लगता अभी उठ जाओगी
जग को जगाने वाली दादी तुम नहीं सो पाओगी
सब मिलने आये स्वागत को वैसे बाहें फैलाओगी
दूर हो रही तन से.....